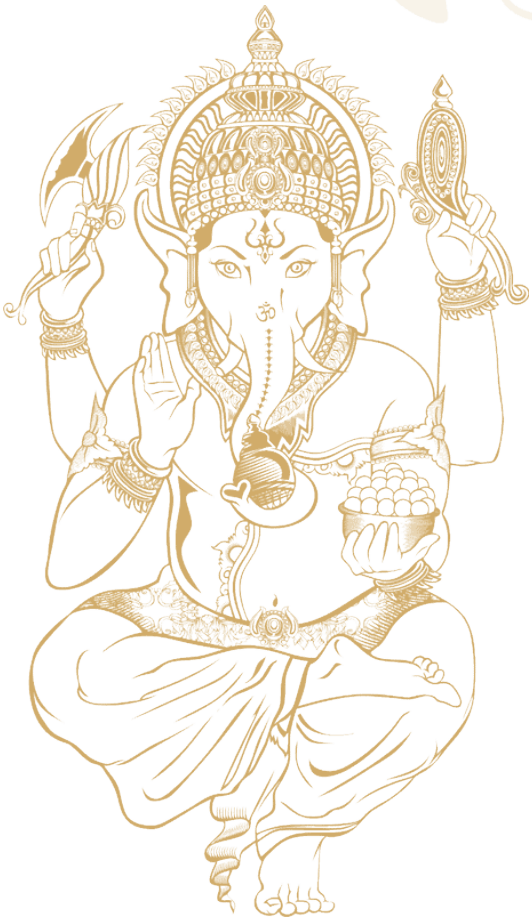

Mr.yogesh wankhede

16 Feb 1994

01:40 AM

Yavatmal

Model: Web-MyKundli

Order No: 120147901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**15-16/02/1994**
दिन	मंगल-बुधवार
जन्म समय	**01:40:00 घंटे**
इष्ट	47:11:04 घटी
स्थान	**Yavatmal**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	20:24:00 उत्तर
रेखांश	78:08:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:17:28 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	01:22:32 घंटे
वेलान्तर	-00:14:12 घंटे
साम्पातिक काल	11:04:55 घंटे
सूर्योदय	06:47:34 घंटे
सूर्यास्त	18:15:54 घंटे
दिनमान	11:28:20 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	03:08:33 कुम्भ
लग्न के अंश	15:33:36 वृश्चिक

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	वृश्चिक - मंगल
राशि-स्वामी	**मेष - मंगल**
नक्षत्र-चरण	**अश्विनी - 1**
नक्षत्र स्वामी	केतु
योग	शुभ
करण	बालव
गण	देव
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	सिंह
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	चू-चूड़ामणि
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1915	माघ	27
पंजाबी	संवत : 2050	फाल्गुन	5
बंगाली	सन् : 1400	फाल्गुन	4
तमिल	संवत : 2050	मासी	4
केरल	कोल्लम : 1169	कुंभम	4
नेपाली	संवत : 2050	फाल्गुन	5
चैत्रादि	संवत : 2050	माघ	शुक्ल 6
कार्तिकादि	संवत : 2050	माघ	शुक्ल 6

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 5
तिथि समाप्ति काल _____: 28:50:04
जन्म तिथि _____: 5
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: रेवती
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 22:10:33 घंटे
जन्म योग _____: अश्विनी
सूर्योदय कालीन योग ____: शुभ
योग समाप्ति काल _____: 29:02:58 घंटे
जन्म योग _____: शुभ
सूर्योदय कालीन करण ____: बव
करण समाप्ति काल _____: 15:30:34 घंटे
जन्म करण _____: बालव
भयात _____: 08:43:37
भभोग _____: 67:49:37
भोग्य दशा काल _____: केतु 6 वर्ष 1 मा 5 दि

घात चक्र

मास _____: कार्तिक
तिथि _____: 1-6-11
दिन _____: रविवार
नक्षत्र _____: मघा
योग _____: विष्कुम्भ
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मृग
लग्न _____: मेष
सूर्य _____: कर्क
चन्द्र _____: मेष
मंगल _____: सिंह
बुध _____: वृष
गुरु _____: कन्या
शुक्र _____: तुला
शनि _____: मिथुन
राहु _____: वृश्चिक

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

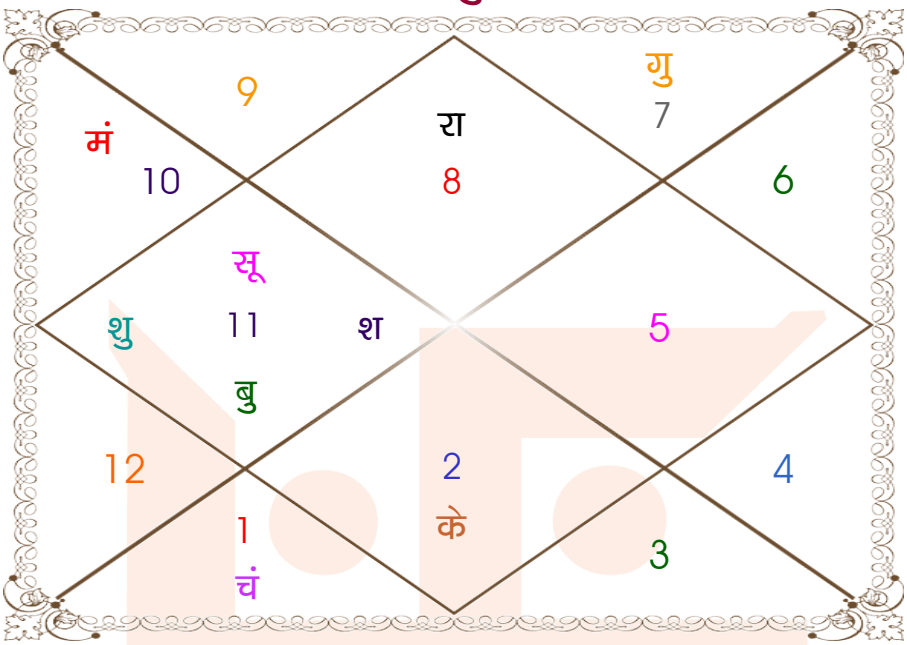

चन्द्र कुंडली

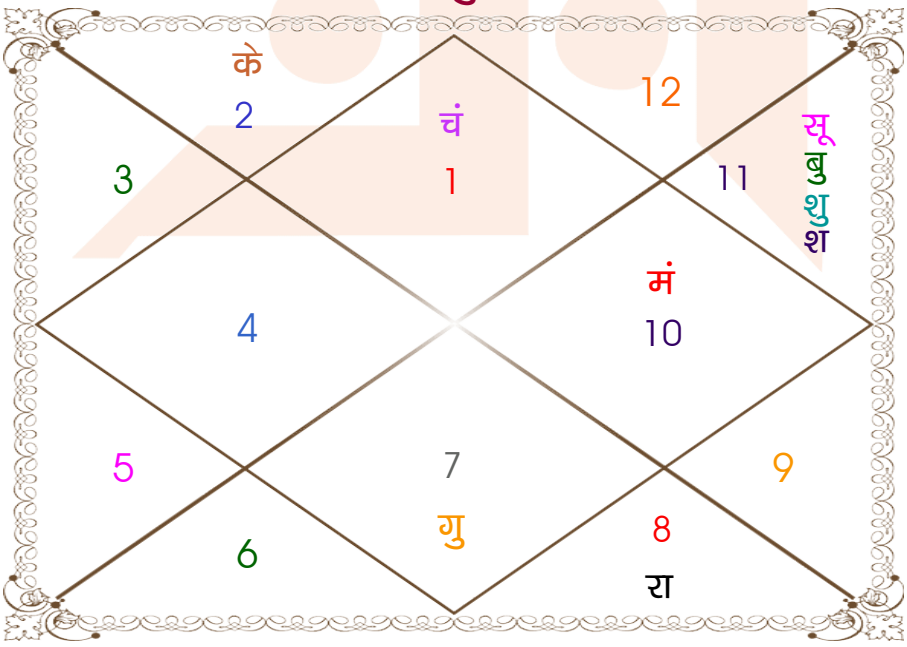

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

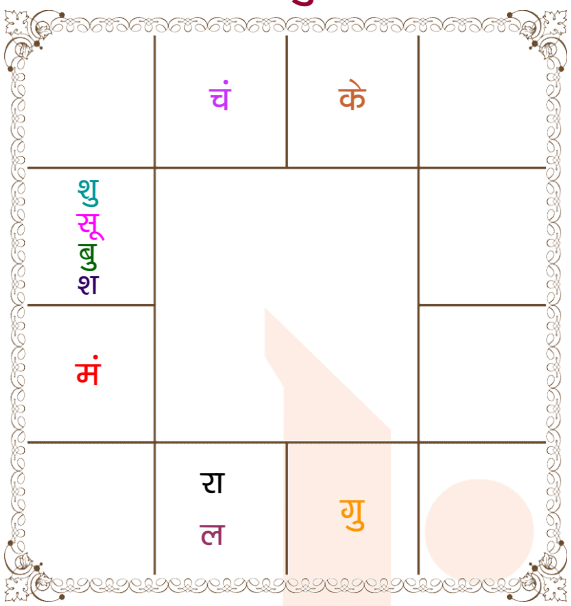

लग्न कुंडली

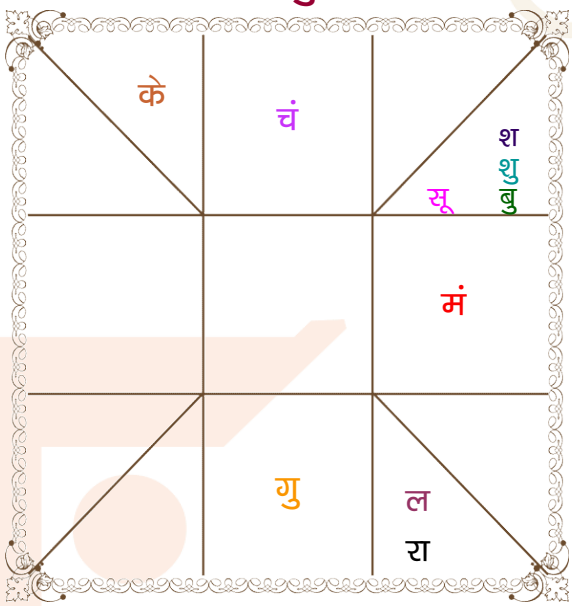

विंशोत्तरी
केतु 6वर्ष 1मा 5दि

केतु

16/02/1994

24/03/2113

केतु	23/03/2000
शुक्र	23/03/2020
सूर्य	23/03/2026
चन्द्र	23/03/2036
मंगल	24/03/2043
राहु	23/03/2061
गुरु	23/03/2077
शनि	23/03/2096
बुध	24/03/2113

योगिनी
भ्रामरी 3वर्ष 5मा 24दि

पिंगला

11/08/2024

12/08/2026

पिंगला	21/09/2024
धान्या	21/11/2024
भ्रामरी	10/02/2025
भद्रिका	22/05/2025
उल्का	21/09/2025
सिद्धा	10/02/2026
संकटा	22/07/2026
मंगला	12/08/2026

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	15:33:36	319:11:32	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	---
सूर्य			कुंभ	03:08:33	01:00:36	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	शुक्र	शत्रु राशि
चंद्र			मेष	01:43:05	11:48:26	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	सम राशि
मंगल		अ	मक	20:48:24	00:47:03	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	उच्च राशि
बुध	व	अ	कुंभ	12:03:25	00:44:44	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	सम राशि
गुरु			तुला	20:37:27	00:02:22	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	गुरु	शत्रु राशि
शुक्र			कुंभ	10:17:47	01:15:08	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	गुरु	मित्र राशि
शनि		अ	कुंभ	08:20:58	00:07:17	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	राहु	मूलत्रिकोण
राहु	व		वृश्चि	04:29:37	00:04:18	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	शत्रु राशि
केतु	व		वृष	04:29:37	00:04:18	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	शनि	सम राशि
हर्ष			मक	00:25:59	00:03:08	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	---
नेप			धनु	28:21:16	00:01:57	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	चंद्र	---
प्लूटो			वृश्चि	04:14:21	00:00:29	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	---
दशम भाव			सिंह	21:16:14	--	पू०फाल्गुनी	--	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:46:46

लग्न-चलित

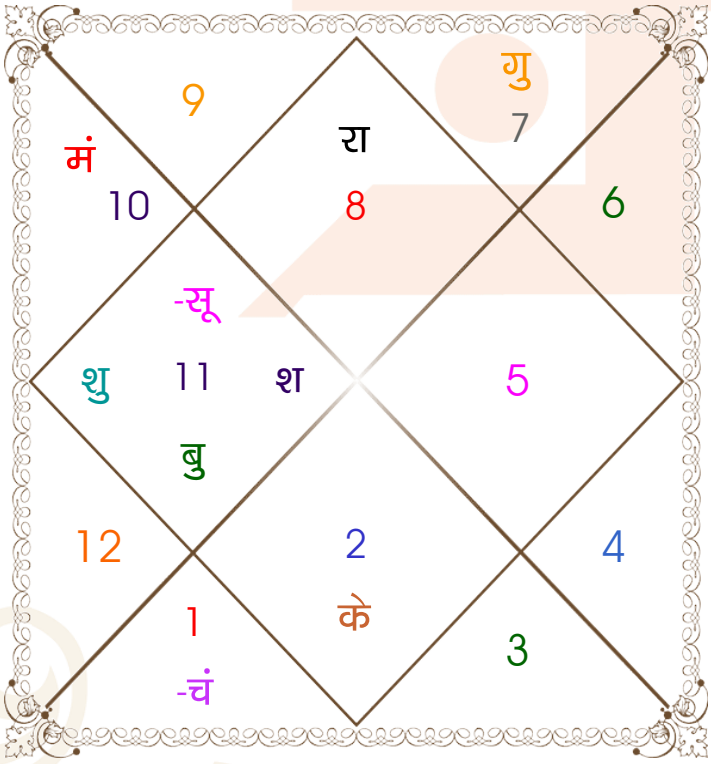

चन्द्र कुंडली

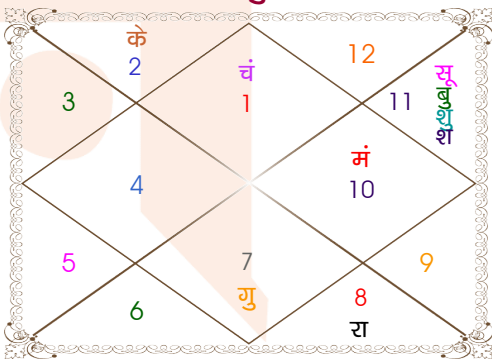

नवमांश कुंडली

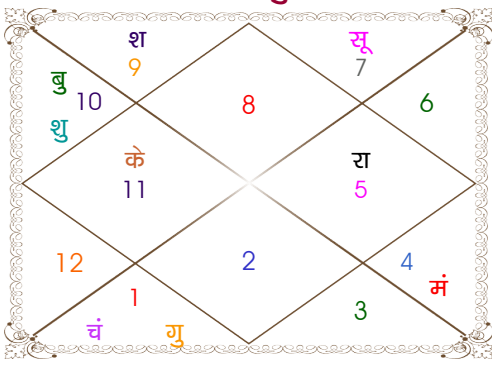

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	वृश्चिक	01:30:43	वृश्चिक	15:33:36
2	धनु	01:30:43	धनु	17:27:49
3	मकर	03:24:55	मकर	19:22:02
4	कुम्भ	05:19:08	कुम्भ	21:16:14
5	मीन	05:19:08	मीन	19:22:02
6	मेष	03:24:55	मेष	17:27:49
7	वृष	01:30:43	वृष	15:33:36
8	मिथुन	01:30:43	मिथुन	17:27:49
9	कर्क	03:24:55	कर्क	19:22:02
10	सिंह	05:19:08	सिंह	21:16:14
11	कन्या	05:19:08	कन्या	19:22:02
12	तुला	03:24:55	तुला	17:27:49

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	15:33:36
2	धनु	15:32:40
3	मकर	17:46:33
4	कुम्भ	21:16:14
5	मीन	22:56:57
6	मेष	20:46:51
7	वृष	15:33:36
8	मिथुन	15:32:40
9	कर्क	17:46:33
10	सिंह	21:16:14
11	कन्या	22:56:57
12	तुला	20:46:51

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती

चलित कुंडली

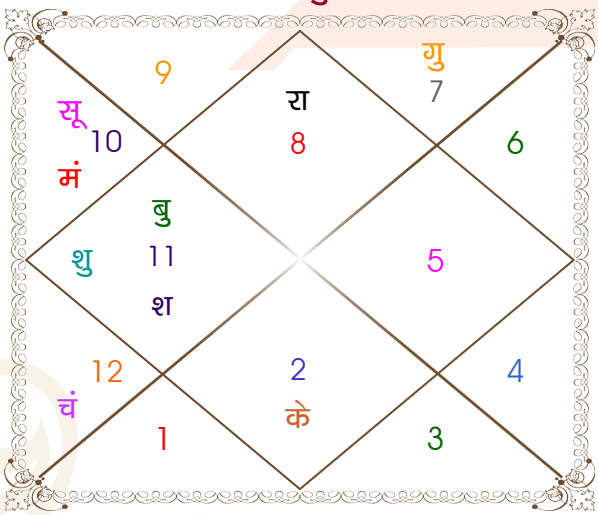

भाव कुंडली

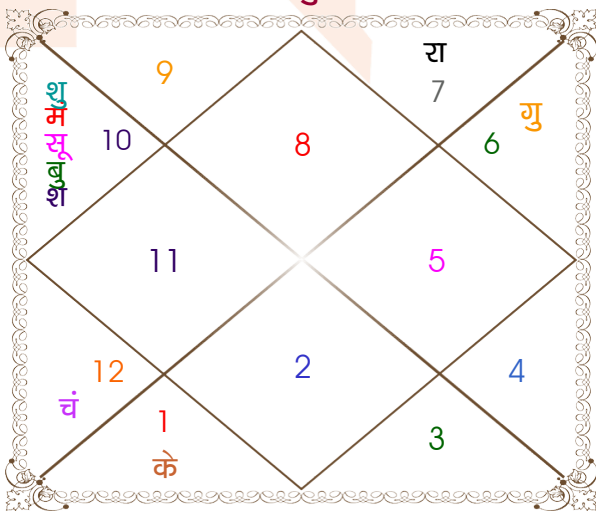

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 6 वर्ष 1 मास 5 दिन

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
16/02/1994		23/03/2000		23/03/2020		23/03/2026		23/03/2036	
23/03/2000		23/03/2020		23/03/2026		23/03/2036		24/03/2043	
	16/02/1994	शुक्र	23/07/2003	सूर्य	10/07/2020	चंद्र	22/01/2027	मंगल	19/08/2036
शुक्र	19/10/1994	सूर्य	23/07/2004	चंद्र	09/01/2021	मंगल	23/08/2027	राहु	07/09/2037
सूर्य	24/02/1995	चंद्र	23/03/2006	मंगल	17/05/2021	राहु	21/02/2029	गुरु	13/08/2038
चंद्र	25/09/1995	मंगल	24/05/2007	राहु	11/04/2022	गुरु	23/06/2030	शनि	22/09/2039
मंगल	21/02/1996	राहु	23/05/2010	गुरु	28/01/2023	शनि	22/01/2032	बुध	18/09/2040
राहु	11/03/1997	गुरु	21/01/2013	शनि	10/01/2024	बुध	22/06/2033	केतु	15/02/2041
गुरु	15/02/1998	शनि	23/03/2016	बुध	15/11/2024	केतु	22/01/2034	शुक्र	17/04/2042
शनि	27/03/1999	बुध	22/01/2019	केतु	23/03/2025	शुक्र	22/09/2035	सूर्य	23/08/2042
बुध	23/03/2000	केतु	23/03/2020	शुक्र	23/03/2026	सूर्य	23/03/2036	चंद्र	24/03/2043

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
24/03/2043		23/03/2061		23/03/2077		23/03/2096		24/03/2113	
23/03/2061		23/03/2077		23/03/2096		24/03/2113		00/00/0000	
राहु	04/12/2045	गुरु	11/05/2063	शनि	26/03/2080	बुध	20/08/2098	केतु	20/08/2113
गुरु	28/04/2048	शनि	22/11/2065	बुध	04/12/2082	केतु	17/08/2099	शुक्र	17/02/2114
शनि	05/03/2051	बुध	28/02/2068	केतु	13/01/2084	शुक्र	18/06/2102		00/00/0000
बुध	22/09/2053	केतु	02/02/2069	शुक्र	15/03/2087	सूर्य	24/04/2103		00/00/0000
केतु	10/10/2054	शुक्र	04/10/2071	सूर्य	24/02/2088	चंद्र	23/09/2104		00/00/0000
शुक्र	10/10/2057	सूर्य	23/07/2072	चंद्र	25/09/2089	मंगल	20/09/2105		00/00/0000
सूर्य	04/09/2058	चंद्र	22/11/2073	मंगल	04/11/2090	राहु	08/04/2108		00/00/0000
चंद्र	05/03/2060	मंगल	29/10/2074	राहु	10/09/2093	गुरु	15/07/2110		00/00/0000
मंगल	23/03/2061	राहु	23/03/2077	गुरु	23/03/2096	शनि	24/03/2113		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 6 वर्ष 1 मा 6 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
23/03/2025		23/03/2026		22/01/2027		23/08/2027		21/02/2029	
23/03/2026		22/01/2027		23/08/2027		21/02/2029		23/06/2030	
शुक्र	23/05/2025	चंद्र	18/04/2026	मंगल	03/02/2027	राहु	13/11/2027	गुरु	27/04/2029
सूर्य	10/06/2025	मंगल	06/05/2026	राहु	07/03/2027	गुरु	25/01/2028	शनि	13/07/2029
चंद्र	11/07/2025	राहु	20/06/2026	गुरु	05/04/2027	शनि	21/04/2028	बुध	20/09/2029
मंगल	01/08/2025	गुरु	31/07/2026	शनि	08/05/2027	बुध	07/07/2028	केतु	18/10/2029
राहु	25/09/2025	शनि	17/09/2026	बुध	07/06/2027	केतु	08/08/2028	शुक्र	07/01/2030
गुरु	13/11/2025	बुध	30/10/2026	केतु	20/06/2027	शुक्र	08/11/2028	सूर्य	01/02/2030
शनि	09/01/2026	केतु	17/11/2026	शुक्र	25/07/2027	सूर्य	05/12/2028	चंद्र	13/03/2030
बुध	02/03/2026	शुक्र	07/01/2027	सूर्य	05/08/2027	चंद्र	20/01/2029	मंगल	11/04/2030
केतु	23/03/2026	सूर्य	22/01/2027	चंद्र	23/08/2027	मंगल	21/02/2029	राहु	23/06/2030

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
23/06/2030		22/01/2032		22/06/2033		22/01/2034		22/09/2035	
22/01/2032		22/06/2033		22/01/2034		22/09/2035		23/03/2036	
शनि	22/09/2030	बुध	04/04/2032	केतु	05/07/2033	शुक्र	03/05/2034	सूर्य	01/10/2035
बुध	13/12/2030	केतु	05/05/2032	शुक्र	09/08/2033	सूर्य	02/06/2034	चंद्र	17/10/2035
केतु	16/01/2031	शुक्र	30/07/2032	सूर्य	20/08/2033	चंद्र	23/07/2034	मंगल	27/10/2035
शुक्र	22/04/2031	सूर्य	25/08/2032	चंद्र	07/09/2033	मंगल	28/08/2034	राहु	24/11/2035
सूर्य	21/05/2031	चंद्र	07/10/2032	मंगल	19/09/2033	राहु	27/11/2034	गुरु	18/12/2035
चंद्र	08/07/2031	मंगल	06/11/2032	राहु	21/10/2033	गुरु	16/02/2035	शनि	16/01/2036
मंगल	11/08/2031	राहु	23/01/2033	गुरु	19/11/2033	शनि	24/05/2035	बुध	11/02/2036
राहु	06/11/2031	गुरु	02/04/2033	शनि	22/12/2033	बुध	18/08/2035	केतु	21/02/2036
गुरु	22/01/2032	शनि	22/06/2033	बुध	22/01/2034	केतु	22/09/2035	शुक्र	23/03/2036

मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध	
23/03/2036		19/08/2036		07/09/2037		13/08/2038		22/09/2039	
19/08/2036		07/09/2037		13/08/2038		22/09/2039		18/09/2040	
मंगल	01/04/2036	राहु	16/10/2036	गुरु	22/10/2037	शनि	17/10/2038	बुध	13/11/2039
राहु	23/04/2036	गुरु	06/12/2036	शनि	15/12/2037	बुध	13/12/2038	केतु	04/12/2039
गुरु	13/05/2036	शनि	04/02/2037	बुध	01/02/2038	केतु	06/01/2039	शुक्र	02/02/2040
शनि	05/06/2036	बुध	31/03/2037	केतु	21/02/2038	शुक्र	14/03/2039	सूर्य	20/02/2040
बुध	27/06/2036	केतु	22/04/2037	शुक्र	19/04/2038	सूर्य	03/04/2039	चंद्र	21/03/2040
केतु	05/07/2036	शुक्र	25/06/2037	सूर्य	06/05/2038	चंद्र	07/05/2039	मंगल	11/04/2040
शुक्र	30/07/2036	सूर्य	14/07/2037	चंद्र	03/06/2038	मंगल	31/05/2039	राहु	05/06/2040
सूर्य	07/08/2036	चंद्र	15/08/2037	मंगल	23/06/2038	राहु	30/07/2039	गुरु	23/07/2040
चंद्र	19/08/2036	मंगल	07/09/2037	राहु	13/08/2038	गुरु	22/09/2039	शनि	18/09/2040

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	7
भाग्यांक	5
मित्र अंक	2, 3, 6, 7, 5
शत्रु अंक	4, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	80%	पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
नीलम	शनि	75%	सुख, पराक्रम
माणिक्य	सूर्य	72%	सुख, व्यावसायिक उन्नति
पुखराज	गुरु	72%	कम खर्च, धन, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	64%	स्वास्थ्य, पराक्रम
लहसुनिया	केतु	64%	दम्पति, सुख
मोती	चंद्र	53%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
पन्ना	बुध	25%	ग्रह कलेश, दुर्घटना, हानि
हीरा	शुक्र	19%	ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट, व्यय

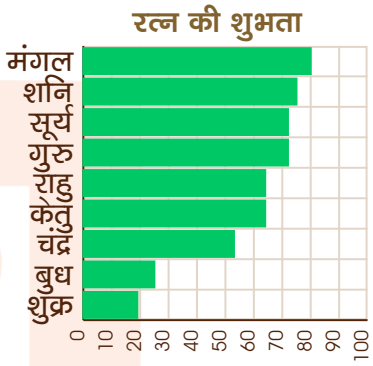

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	23/03/2000	59%	31%	86%	25%	72%	31%	63%	52%	77%
शुक्र	23/03/2020	59%	31%	80%	38%	72%	44%	82%	70%	70%
सूर्य	23/03/2026	84%	59%	86%	25%	78%	0%	63%	52%	52%
चंद्र	23/03/2036	78%	66%	80%	38%	72%	19%	75%	52%	52%
मंगल	24/03/2043	78%	59%	92%	0%	78%	19%	75%	52%	70%
राहु	23/03/2061	59%	31%	67%	25%	72%	31%	82%	77%	52%
गुरु	23/03/2077	78%	59%	86%	0%	84%	0%	75%	64%	64%
शनि	23/03/2096	59%	31%	67%	38%	72%	31%	88%	70%	52%
बुध	24/03/2113	78%	31%	80%	50%	72%	31%	75%	64%	64%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	सन्तति
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	शत्रु से कष्ट
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	दम्पति
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	बदनामी
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है। यह भाव पराक्रम मित्र एवं भाई बहनों का प्रतिनिधि भाव है तथा मंगल इनका कारक है अतः तृतीय भाव में मंगल की स्थिति शुभ मानी जाती है। इसके प्रभाव से आप एक पराक्रमी पुरुष होंगे तथा अपने समस्त सांसारिक कार्य कलापों को आप निर्भय होकर सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको समय समय पर इच्छित सफलता प्राप्त होगी। साथ ही भाई बहनों से भी आवश्यक सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी तथा अपने परिश्रम एवं पराक्रम से आप संचार साधनों को भी अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

कुंडली में तृतीयस्थ मंगल की चतुर्थ दृष्टि षष्ठ भाव पर पड़ेगी इसके प्रभाव से शत्रु वर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे तथा प्रतियोगी परीक्षाओं मुकद्दमों या चुनाव आदि में आपको जीवन में सामान्यतया सफलताएं मिलती रहेंगी। साथ ही इच्छित मात्रा में धनऐश्वर्य की भी प्राप्ति होगी परन्तु पित गर्मी अथवा रक्त विकार संबंधी किसी परेशानी से शारीरिक कष्ट हो सकता है। नवम भाव पर सप्तमस्थ दृष्टि से धर्म एवं धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा भाग्य की अपेक्षा कर्म करने पर ही आप अधिक विश्वास करेंगे। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप स्वपराक्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। यद्यपि इनमें आपको न्यूनाधिक समस्याओं एवं व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अंततोगत्वा आप अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल रहेंगे। लेकिन पिता के स्वास्थ्य के लिए यह स्थिति मध्यम रहेगी परन्तु समाज में वे सम्मानीय पुरुष होंगे तथा अन्य जनों से पूर्ण आदर प्राप्त करेंगे।

इस प्रकार मंगल की इस स्थिति के प्रभाव से आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुख शान्ति से परिपूर्ण रहेगा तथा परिवार का यथोचित पालन करने में आप समर्थ रहेंगे।

पारिवारिक जनों से आपको यथोचित सहयोग एवं प्रोत्साहन मिलता रहेगा जिससे आप उत्साह पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में अनन्त नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। इसके कारण जातक को व्यक्तित्व निर्माण एवं आगे बढ़ने में आंशिक रूप से संघर्ष करना पड़ता है। कभी-कभी विरक्ति पैदा होती है। गृहस्थ जीवन कुछ अस्तव्यस्त रहता है। न्यायालय से थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय बन जाता है। जीवन में समय-समय पर आंशिक रूप में बाधाएँ आती हैं। परन्तु कालान्तर में सभी विघ्न-बाधाएँ दूर होती चली जाती हैं। जीवन में अनेक बार अपयश मिलने का भय बना रहता है। अपने रिश्तेदार नुकसान पहुँचाने की चेष्टा करते हैं, परन्तु उसमें वे सफल नहीं होते। जातक बार-बार अपने कार्य को बदलता है। परिणामस्वरूप आंशिक रूप में कभी क्षति उठानी पड़ती है। खासकर साहूकारी के व्यवसाय में नुकसान उठाता है। लेकिन जातक के जीवन में एक चमत्कारिक समय भी आता है। और समय-समय पर शुभ कार्य सम्पादित होते रहते हैं। आर्थिक स्थिति थोड़ा नाजुक होती है। इस योग के कारण जातक थोड़ा बहुत पराक्रमहीन, आलसी एवं नीचकर्म करने में तत्पर हो जाता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर,

रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में चन्द्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ॐ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, क्रोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रूचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरू, यात्रा करने का शौकीन ,आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

मंगल

तृतीयभाव में मंगल हो तो जातक कटुभाष, भ्रतृकष्टकारक, प्रदीप्त जठराग्निवाला, बलवान्, बन्धुहीन, सर्वगुणी, साहसी, धैर्यवान् प्रसिद्ध एवं शूरवीर होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराक्रमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। शक्ति, साहस तथा पराक्रम से वे युक्त रहेंगे। साथ ही जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। धन धान्य से भी वे युक्त रहेंगे एवं समयानुसार आपकी आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में आपकी पूरी सहायता करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी एवं सर्वदा विषम परिस्थितियों में भी उनका पूर्ण सहयोग करेंगे। आप के परस्पर संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा मतवैमिन्यता के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु वह अल्प समय के लिए रहेगा कुछ समय बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप भाई बहिनों के सुख मध्यम रूप से ही अर्जित कर सकेंगे।

बुध

चतुर्थभाव में बुध हो तो जातक पण्डित भाग्यवान् नीतिवान्, नीतिज्ञ, लेखक, विद्वान्, बन्धुप्रेमी, उदार, गतिप्रिय, आलसी , स्थूलदेही, वाहनसुखी एवं दानी होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

तुला राशि में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य धार्मिक, प्रवृत्ति, निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक, बहुपुत्रवान् एवं सुखी होता है।

शुक्र

चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक बलवान्, परोपकारी, सुन्दर, व्यवहार कुशल,

विलासी, दीर्घायु, पुत्रवान्, भाग्यवान्, सुखी, दानी, वाहनों का स्वामी एवं आस्तिक होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन,वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

वृश्चिक राशि में राहु हो तो जातक धूर्त, निर्धन, रोगी, धननाशक, अनैतिक चरित्र एवं धोखेबाज होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

वृष राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, निरुद्यमी, आलसी, वाचाल एवं कामुक होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- सूर्य
(23/03/2020 - 23/03/2026)

सूर्य की महादशा 23/03/2020 को आरम्भ होगी और 6 वर्ष की अवधि के बाद 23/03/2026 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। सूर्य यश, प्रतिष्ठा, शासकीय कृपा, उच्चाधिकार तथा सामान्य सफलता का प्रतिनिधित्व करता है और चतुर्थ भाव माता, धन गाड़ी और पारिवारिक खुशी को सूचित करता है। अतः इस दशा में आप को धन-सम्पत्ति और गाड़ी की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

आप सतत् उत्साही और क्रियाशील रहेंगे। किन्तु आपको अधिक परिश्रम तथा उत्तेजना से बचने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि इनके कारण आपको रक्तचाप तथा हृदय-वेदना जैसी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। किन्तु उचित उपाय से इससे बचा जा सकता है। सम्बन्धियों के साथ संबंधों में तनाव के कारण मानसिक शान्ति में कमी हो सकती है।

अर्थ :

इस दशा के दौरान आपको धन की प्राप्ति होगी। आपको अचल तथा पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको इस अवधि में यातायात से लाभ होगा। आपको भूमि तथा भवन की प्राप्ति और भूमि-उत्पाद से लाभ होगा। इस दशा में सट्टे का परित्याग करें क्योंकि यह लाभदायक नहीं होगा।

व्यवसाय :

दशम भाव पर सूर्य की दृष्टि जीवन-वृत्ति के लिये अत्यंत शुभ है। उन्नति, शक्ति तथा अधिकार प्राप्ति की सम्भावना है। आपको शासन अथवा अन्य उच्च प्राधिकारों से मान्यता प्राप्त हो सकती है। आप अपने सभी कार्यों में सफल होंगे। आपको अपने उच्चाधिकारिओं से सद्भाव तथा सहयोग मिलेगा। आप प्रशासनिक कार्यों में श्रेष्ठ रहेंगे। आपको नौकरी में पदोन्नति मिलेगी और आमदनी तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। व्यवसायियों को साझेदारी के व्यवसाय में लाभ मिलेगा। इस दशा में आप कुछ अनुबन्ध कर सकते हैं। व्यवसाय से सम्बन्ध यात्रा हो सकती है। इस दशा में व्यवसाय के क्षेत्र में आपकी आकांक्षाओं की पूर्ति हो सकती है।

पारिवारिक जीवन :

यदि आप अपनी इच्छाओं को दूसरों पर आरोपित न करें तो आपको पारिवारिक सुख मिलेगा। आप समाज के प्रति निष्ठा रखते हैं और उदार हैं। आपके अनेक मित्र हैं, किन्तु आप स्वच्छन्द हैं और आपकी इच्छाशक्ति अत्यन्त प्रबल है जिससे आपको कभी-कभी विरोध का सामना करना पड़ सकता है। सन्तानों से सम्बन्ध में कभी-कभी तनाव उत्पन्न हो सकते हैं। आपके जीवन साथी को समृद्धि, कार्य के अच्छे अवसर, यश, प्रतिष्ठा, शक्ति, अधिकार आदि की

प्राप्ति होगी। आपकी माता के स्वास्थ्य को देख-रेख की जरूरत है। आपको पैतृक सम्पत्ति तथा पिता से लाभ की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को इस अवधि में लाभ मिलेगा ओर उनके रुके हुए कार्य पूरे होंगे। बड़े भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उन्हें अपने कार्यों में सफलता तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। उनके साथ आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप भौतिकी तथा विद्युत-अभियंत्रणा जैसे विज्ञान विषयों और विज्ञान में अच्छा करेंगे। आपको यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और बहुत से लोग आपकी सराहना करेंगे।

अंर्तदशा :- सूर्य - केतु
(15/11/2024 - 23/03/2025)

आपके लिए सूर्य की महादशा 23/03/2020 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 15/11/2024 को आरंभ होकर 23/03/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

इस अवधि में व्यापार से धनागम होगा। साझेदारी लाभप्रद रहेगी। कार्य-व्यवसाय हेतु यात्राएं होंगी। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से लाभ होगा। शत्रु और स्पर्धी आपको बदनाम करने की कोशिश कर सकते हैं।

दांपत्य जीवन में कुछ समस्या आ सकती है या जीवनसाथी किसी कार्य-व्यवसाय के कारण घर से दूर जा सकते हैं। आध्यात्मिक कार्यों में आपकी रुचि होगी और परोपकार की भावना में वृद्धि होगी।

जीवनसाथी को लाभ होगा, संपदा बढ़ेगी, वाहन सुख रहेगा। पिता का समय प्रसन्नता से बीतेगा। उन्हें सफलता, प्रोन्नति, भूमिप्राप्ति, उच्चाधिकारियों से लाभ का संकेत है। माता को अचल संपत्ति, रिश्तेदारों से मदद मिलेगी। भाई-बहनों को निवेश से लाभ होगा।

आपकी संतान को सहयोगियों से लाभ होगा। उन्हें नये मित्रों से पहचान बढ़ाने से पहले सतर्क रहना चाहिए।

अगर आप सेवारत हैं तो लाभ प्राप्त करेंगे, दूसरों से व्यवहार करते वक्त सावधान रहें। परामर्शदाताओं की व्यस्तता बढ़ेगी, प्रसिद्धि मिलेगी। व्यापारी शत्रुओं पर विजयी होंगे।

उत्सर्जन तंत्र और आंतों के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द, सतनता, तिल और कस्तूरी का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - शुक्र
(23/03/2025 - 23/03/2026)

सूर्य महादशा में शुक्र अंतर्दशा होगी।

इस अवधि में आप सुखी और संतुष्ट रहेंगे। माता के साथ संबंध मधुर रहेंगे। परिवार के लोग और मित्रों का आपसे प्रेम बढ़ेगा। वाहन, अचल संपत्ति और आभूषण खरीद सकते हैं। आपका प्रभाव और शक्ति बढ़ेंगे, व्यापार से लाभ होगा, धनार्जन होगा और सुखद यात्राएं होंगी।

आपके जीवनसाथी और व्यापार में साझेदार भाग्यशाली होंगे। पिता को व्यापार में लाभ होगा। माता को घरेलू सुख, सुविधाएं, समाजसेवा के अवसर मिलेंगे। भाई-बहनों को धन, पारिवारिक सुख, उत्तम स्वास्थ्य का योग है। आपकी संतान को शिक्षा पर अधिक ध्यान देना चाहिए क्योंकि उनका मन मनोरंजन की ओर अधिक रहेगा।

महादशा :– चन्द्र
(23/03/2026 - 23/03/2036)

चन्द्र की महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 23/03/2026 को आरम्भ और 23/03/2036 को समाप्त होगी।

चन्द्र षष्ठम भाव में अवस्थित है और षष्ठम भाव रोग, बीमारी, रोजगार अधीनस्थ कर्मचारियों या सेवकों, ऋण, शत्रुओं मामा, कृपणता, तथा तीव्र व्यथा का प्रतिनिधित्व करता है। अतः दस वर्षों की यह अवधि औसत अवधि होगी और उदास, राहत, दुःख तथा समस्याओं की अवधि होगी और आप परिस्थिति के अनुसार इनके साथ समझौता करने का प्रयास करेंगे।

स्वास्थ्य :

आप किसी बड़े या छोटे रोग से ग्रसित नहीं होंगे, अपना सन्तुलन बनाए रहेंगे और समय सारणी के अनुसार और स्फूर्ति तथा सक्रियता के साथ अपने कार्यों का संपादन करेंगे। इस अवधि में आपका स्वास्थ्य और शक्ति सामान्य रहेगी और आप अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे।

अर्थ और संपत्ति :

दस वर्ष की इस अवधि में आप के मामा आपकी बहुत सहायता करेंगे औन उनकी सहायता के कारण आपकी संपत्ति में वृद्धि होगी और आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आप सुख-साधनों पर व्यय करेंगे और जीवन का भरपूर आनन्द उठाएंगे।

व्यवसाय :

आपका व्यावसायिक जीवन सुखी होगा। अगर नौकरी पेशा हैं तो जीवन में उन्नति के अनेक अवसर मिलेंगे और यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो नये व्यवसाय के अवसर मिलेंगे जिसमें आप सफल होंगे। घाटे के अवसर भी आ सकते हैं। आपके मामा आपकी आपकी समस्याओं के समय बहुत सहायता करेंगे। आपके मामा अपने जीवन में बहुत तरक्की करेंगे और आपके परिवार की सहायता करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपके सहायक व सहयोगी होंगे जिससे आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्रपूर्ण होगा। किन्तु विषादपूर्ण मुद्रा और स्वभाव के कारण कभी-कभी समस्याएं आ सकती हैं जिसके फलस्वरूप आपका दैनिक जीवन अव्यवस्थित हो सकता है।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

विषादग्रस्त मुद्रा के कारण आप साहित्य के अध्ययन में लीन रहेंगे। आपका झुकाव ज्योतिष और खगोल की ओर भी हो सकता है।

अंर्तदशा :- चन्द्र - चन्द्र
(23/03/2026 - 22/01/2027)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 23/03/2026 को प्रारंभ होकर 23/03/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 23/03/2026 को प्रारंभ होकर 22/01/2027 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मपत्रिका में चंद्रमा छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, तीमारदारी, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। चंद्रमा मन का कारक है। छठे भाव में इसकी स्थिति के कारण यह अवधि अशुभ हो सकती है। उच्चाधिकारियों, सहकर्मियों और मातहतों के साथ संबंध कटु हो सकते हैं। चंद्र अगर उच्च का या शुभ हो, तो हानि कम होगी। कार्यक्षेत्र में गड़बड़ी या कुप्रबंधन का प्रसार संभव है; धनहानि भी हो सकती है। मष्तिष्क और यकृत की शक्ति कम हो सकती है।

खानपान कर नियंत्रण रखें। मष्तिष्क को सबल बनाने के लिए चांदी की अंगूठी में जड़ा 5 रत्ती का मोती कनिष्ठिका में दायें हाथ में, सोमवार को प्रातःकाल दूध से धोकर, चंद्र मंत्र का 11 बार उच्चारण करने के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - मंगल
(22/01/2027 - 23/08/2027)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 23/03/2026 को प्रारंभ होकर 23/03/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 22/01/2027 को प्रारंभ होकर 23/08/2027 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। तृतीय भाव में स्थित होकर मंगल कुंडली के 6, 9, 10 भावों पर दृष्टिपात कर रहा है।

मंगल ऊर्जा का कारक है। इस अंतर्दशा में आप प्रसिद्ध, साहसी, धैर्यवान, वाहनयुक्त होंगे। बहुत से विषयों के माहिर होंगे। दुःसाहसी होने के कारण घर में गलतफहमी हो सकती है; दुर्घटना भी संभव है। कटुता के कारण आपके भाई-बहनों को भी हानि हो सकती है।

कान के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए प्रतिदिन भौम गायत्री मंत्र के 108 बार जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - राहु
(23/08/2027 - 21/02/2029)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 23/03/2026 को प्रारंभ हुई और 23/03/2036 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18 मास रहेगी। आपके लिए यह 23/08/2027 को प्रारंभ होकर 21/02/2029 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। राहु छायाग्रह है और लगभग शनि के अनुसार कार्य करता है। लग्न में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली में सप्तम भाव को दृष्टि द्वारा प्रभावित कर रहा है। सप्तम में केतु स्थित है।

इस अवधि में आप स्वार्थी, शक्की और निम्नकार्यों में रुचि रखने वाले हो सकते हैं। स्वास्थ्य निर्बल हो सकता है। कार्यप्रणाली कुछ अजीब हो सकती है। विवाहित जीवन में विवाद संभव है।

नकारात्मक विचारों से बचें। स्वयं पर भरोसा करें ओर आगे बढ़े। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18,000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - गुरु
(21/02/2029 - 23/06/2030)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 23/03/2026 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 21/02/2029 को प्रारंभ होकर 23/06/2030 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर बृहस्पति कुंडली के 4, 6, 8 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके शुभत्व में वृद्धि कर रहा हैं

इस अवधि में आपकी धर्म में रुचि घट सकती है। दुराचार और वासनापूर्ण जीवन से बचें। सुख-सुविधाओं, वाहन, वस्त्र, आभूषण आदि के लिए आपका आकर्षण तीव्र होगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 (रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में गुरुवार के दिन प्रातःकाल दायें हाथ की तर्जनी में कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, बृहस्पति के मंत्र के 99 जाप करने के बाद धारण करें।